ceÜ

আল্লাহর প্রিয় বান্দা হওয়ার উপায়

gvIjvbv wRjji ingvb nvweex

dih Bev`‡Zi cvkvcwk bdj Bev`Z Ges wRwK‡ii মাধ্যমে মু'মিন মুসলমান মহান প্রভু আল্লাহ তা'য়ালার প্রিয় ev›`v n‡Z cv‡i| †Kbbv wRwKi A_ ¯§iY Z_v ইয়াদগারী করা। যে বান্দা যত বেশি আল্লাহর স্মরণ করবে, আল্লাহ Zvqvjvl †m ev›`v‡K ZZ †ewk ¯§iY করবেন। সে বিষয়ে আল্লাহ কালামে মজীদের সুরা evKvivq Bikv` K‡ib- ÒdvhKi"bx AvhKiKgÓ| A_vr †n ev›`viv! †Zvgiv Avgv‡K ¯§iY Ki‡j Awgl তোমাদের স্মরণ করবো। কুরআনে পাকের অন্যত্র আল্লাহ Zvqvjv Av‡iv Bikv` K‡ib- Ò†n Bgvb`viMY! †Zvgiv আল্লাহকে অধিক স্মরণ কর এবং সকাল-সন্ধ্যায় আল্লাহর cweÎZv I gwngv †NvlYv Ki| [miv Avnhve : 41-42]

আল্লাহ তায়ালার জিকিরের মাধ্যমে বান্দার হৃদয়-gb স্রষ্টামুখী হয়। আর বান্দা আল্লাহমুখী হলে ইবলিশ শয়তান Zvi av‡i-কাছে ঘেঁষতে পারেনা। নবী করিম সাল্লাল্লাহু Zvqvjv AvjvB‡n Iqt সাল্লাম ইরশাদ করেন- ÒkqZvb Av`g mšv‡bi Kj‡ei Dci †R‡K e‡m _v‡K| hLb সে আল্লাহকে স্মরণ করে তখনই শয়তান বান্দার কাছ থেকে দূরে সরে যায়। আর যখন সে আল্লাহ তায়ালা থেকে Mwdj n‡q hvq, ZLb kqZvb Zvi Kj‡e K gšYv w`‡Z _v‡K| [eLvix kixd]

¶wZKi kqZv‡bi nvZ †_‡K wb‡R‡K i¶v Ki‡Z n‡j আমাদের বেশি বেশি আল্লাহ তায়ালার জিকির করতে হবে। আল্লাহ পাক রাব্বুল আলামিন বান্দাকে সকাল-mÜ¨v gwb‡ei wRwKi Kivi ZwM` w`‡q‡Qb| ev›`v mKvj-mÜ¨v gwb‡ei wRwKi Z_v Bqv`Mvix Ki‡j Zvi Kje mKj cKvi Kwjgv †_‡K cwiï×, cZcweÎ n‡q hv‡e| e‡S wKsev bv e‡S †m †h Mbvn K‡i †m ¸bvn ev›`vi Aši‡K KjwlZ K‡i| Avi GB KjlZv †_‡K কলবকে পরিশুদ্ধ করার উপায় হলো মহান প্রভু আল্লাহর জিকির করা। রাসূলে পাক সাল্লাল্লাহু তায়ালা আলাইহে ওয়াসাল্লাম ইরশাদ করেন- ÔcwZwU e¯ cwi®vi Kivi hš i‡q‡Q| Avi Kje cwi®vi Kivi hš হলো আল্লাহ তায়ালার জিকির।' আর আল্লাহর শাস্তি †_‡K gw³ †c‡Z আল্লাহর জিকিরের চেয়ে বড় কোন ইবাদত নেই।

[ewqnvKx kixd]

আল্লাহর প্রদত্ত ফরয ইবাদত বান্দার জন্য বাধ্যতামূলক। dih Bev`‡Zi †¶‡Î †Kvb iKg Qvo †bB| Z‡e আল্লাহর সান্নিধ্য পেতে হলে মহাb móvi wcqfvRb n‡Z n‡j bdj Bev`‡Zi †Kvb weKí †bB| bdj Bev`‡Zi মাধ্যমে বান্দা অতি সহজেই আল্লাহর নৈকট্য লাভ করতে cv‡i| Zvnv¾‡`i bvgvR I wRwKi n‡jv bdj Bev`‡Zi g‡a¨ AZ¨š¸i"ZcY Bev`Z|

রাসূলে আত্বহার সাল্লাল্লাহু তায়ালা আলাইহে ওয়াসাল্লাম wRwKi‡K Rvbv‡Zi evMvb e‡j AwfwnZ K‡i‡Qb| wZwb Bikv` digvb- Ô†Zvgiv hLb Rvbv‡Zi evMvb¸‡jvi cvk w`‡q hvI, ZLb †mLv‡b †ewk K‡i wePiY Ki| আরয করা হলো, ইয়া রাসূলাল্লাহ সাল্লাল্লাহু তায়ালা আলাইহে ওয়া সাল্লাম! জান্নাতের বাগানগুলো কি? তিনি Bikv` K‡ib- wRwK‡ii nvjKvmgn|

[gmbv‡` Bgvg Avng` I wZiwghx kixd]

ûRর পুরনূর সাল্লাল্লাহু তায়ালা আলাইহে ওয়া সাল্লামকে সম্বোধন করে আল্লাহ তায়ালা ইরশাদ করেন- Ò†n wcqZg ivmj ! Avcwb ¯§iY Ki"b Avcbvi cwZcvjK‡K g‡b g‡b webxZfv‡e, fqRwoZ Aš‡i, D"Pi‡e bq, mKv‡j I mÜ¨vq Z_v mve¶wYKfv‡e Ges Avcwb D`vmxb n‡eb bv|Ó [miv Aôivd : 205]

আয়াতে নবী করিম সাল্লাল্লাহু তায়ালা আলাইহে ওয়া সাল্লামকে সম্বোধন করা হলেও উদ্দেশ্য সব মুসলমান। সব gmjgvb‡`i‡KB mKvj-mÜ¨v wRwK‡ii G wb‡`k c`vb করা হয়েছে। নিয়মিত আল্লাহ তায়ালার জিকির করলে আল্লাহর নৈকট্য লাভের পাশাপাশি জাগতিক উন্নতি সাধন হয়। আল্লাহ পাক নিয়মিত wRwKiKvixi wiwhK I nvqv‡Zi g‡a¨ eiKZ `vb K‡ib| RvMwZK Rxe‡b ev›`vi gvb-ghv`v ew× K‡i †`b| Avi mePvB‡Z eo cwß n‡jv wRwK‡ii Kvi‡Y Cgv‡bi mv‡_ gZ¨ bmxe n‡e| GLv‡b GKwU K_v g‡b ivL‡Z n‡e †h, Bev`Z PvB dih †nvK ev bdj| †Kvb cKvi Bev`‡Zi Rb¨ আল্লাহ মুখাc¶x bb| A_vr Bev`Z Kiv Avi bv Kivi মধ্যে আল্লাহ তায়ালার কিছু যায় আসে না। ইবাদতের g‡a¨ ev›`vi Rb¨ mecKvi Kj¨vY wbwnZ i‡q‡Q| ev›`v Bev`‡Zi gva¨‡g móvi mšwó weavb Ki‡Z cv‡i| যেহেতু আল্লাহ তায়ালা বান্দাকে সৃষ্টি করার উদ্দেশ্য হলো Zvi Bev`Z Kiv|

ceÜ

†m‡nZ †mwU ci‡Yi gva¨‡g ev›`v wb‡Ri KZÁZv Z_v wb‡Ri AvbM‡Z¨i cwiPq w`‡Z cv‡i| G Kvi‡Y gvIjv আলী শেরে খোদা রাদিয়াল্লাহু তায়ালা আনহু বলতেন, হে আল্লাহ! আমি জাহান্নামের ভয়ে কিংবা জান্নাতের লোভে †Zvgvi Bev`Z Kwibv| Awg †Zvgvi Bev`Z Kwi, কারণ তুমি ইবাদতের যোগ্য। আল্লাহ ZvqvjvB †Kej Avgv‡`i Bev`‡Zi nK`vi| G Rb¨B †h, wZwb Avgv‡`i mwó K‡i‡Qb, wZwb Avgv‡`i jvjb-cvjb K‡ib, wZwb Avgv‡`i Rxeb-gZ¨ me wKQiB GKgvÎ gwjK| me‡¶‡Î ev›`vB Zvi gLv‡c¶x| Avi †Kvb mËvB G ¶gZvi AwaKvix bq| mZivs, Kvqg‡bvev‡K¨ ev›`vi PvIqv-cvIqv n‡Z n‡e; mKj cKvi Bev`Z এবং জিকিরের মাধ্যমে মহান স্রষ্টা আল্লাহ তায়ালার নৈকট্য I wcqfvRb nIqv|

আল্লাহর প্রিয় বান্দাগণের গুণাবলী

আল্লাহ পাক রাব্বুল আলামীন কালামে মাজীদের সূরা diKv‡bi †klvs‡k Zvi wcq ev›`v‡`i †ZiwU ¸‡Yi কথা উল্লেখ করেছেন। এর মধ্যে বিশ্বাস, সংশোধb, ^`wnK I Aw_K hveZxq e¨w³ MZ Kv‡R-কর্মে আল্লাহ ও তাঁর প্রিয় হাবিব সাল্লাল্লাহু তায়ালা আলাইহে ওয়া সাল্লাম Gi weavb Ges B"Qvi AbmiY-AbKiY| Ab¨ gvb‡li mv‡_ mvgwRKZv I m¤úK ¯vc‡bi cKvi‡f`, w`biv Z ইবাদত পালনের সাথে সাথে আল্লাহভীতি, যাবতীয় গুনাহ †_‡K †e‡P _vKvi cqvm, wb‡Ri, ¯xi Ges mšvb-mš wZi ms‡kvab wPšv BZ¨w` Aš f³ i‡q‡Q|

c_g ¸Y: আল্লাহর বান্দা হওয়া। আল্লাহার বান্দা হওয়ার †hvM¨ †mB e¨w³ n‡Z cv‡i, †h Zvi wekvm, wPšvaviv I cwZwU AvPiY cvjbKZvi Av‡`‡ki AbMvgx iv‡L Ges hLb †h Av‡`k nq, Zv cvj‡bi Rb¨ m`v DrKY _v‡K|

wØZxq ¸Y: Zviv cw_ex‡Z bgZvi mv‡_ Pjv‡div K‡i| LwU gwg‡bi me A½-প্রত্যঙ্গ আল্লাহর সামনে হীন হয়ে _v‡K|

ZZxq ¸Y : hLb AÁvZm¤úb †jvK Zv‡`i mv‡_ K_v e‡j ZLb Zviv kwšcY fvIvq K_v e‡j| hv‡Z Zvi K_vi Øviv Ab¨iv Kó bv cvq Ges Zviv wb‡Riv ¸bvnMvi bv nq|

PZ_ ¸Y : Zviv ivZ hvcb K‡i Zv‡`i cvjbKZvi mvg‡b wmR`v Ae¯vq I `Êvqgvb Ae¯vq| ivm‡j cvK সাল্লাল্লাহু তায়ালা আলাইহে ওয়া সাল্লাম ইরশাদ করেন- †Zvgiv wbqwgZ Zvnv¾` co| †Kbbv, GUv †Zvgv‡`i ceeZx me ‡bK ev›`vi Af¨vm wQj| GUv †Zvgv‡`i আল্লাহর নৈকট্য দানকারী, মন্দকাজের কাফফারা স্বরুপ।

[ZvdmxÿiwgRnvix]

হুজুর সাল্লাল্লাহু তায়ালা আলাইহে ওয়া সাল্লাম আরো Bikv` K‡ib - †h e¨w³ Bkvi bvgvh RvgvZ mnKv‡i Av`vq K‡i, †m †hb AaiwÎ Bev`‡Z AwZewnZ Kij Ges †h e¨w³ dR‡ii bvgvR RvgvZ mnKv‡i Av`vq K‡i, Zv‡K Aewkó A‡aK iwÎI Bev`‡Z AwZewnZKvix wn‡m‡e MY¨ Kiv nq|

cÂg ¸Y: Zviv w`b-ivZ Bev`‡Z gk¸j _vKv m‡ZI নিশ্চিত হয়ে বসে থাকে না। বরং সব সময় আল্লহকে ভয় K‡i Ges Av‡Liv‡Zi wPšvq _v‡K| hvi `i"Y Zviv †PóvI অব্যাহত রাখে। আল্লাহর কাছে দোয়াও করতে থাকে।

Iô ¸Y: Zviv Ace¨q K‡i bv Ges KcYZv K‡i bv| eis Df‡qi ga¨eZx mgZv eRvq iv‡L|

mßg ¸Y: তারা ইবাদতে আল্লাহর সাথে কাউকে শরিক K‡i bv|

Aóg ¸Y: Zviv KvD‡K Ab¨vqfv‡e nZ¨v K‡i bv|

beg ¸Y: Zviv e¨wfPv‡ii wbKUeZx nq bv|

**`kg ¸Y:** Zviv wg_¨v I ewZj gRwj‡k †hvM`vb K‡ibv| A_vr Mvb, ev`¨-বাজনা, অশ্লীল সস¯‹wZ‡Z †hvM`vb K‡i bv|

**GKv`k ¸Y :** hw` Ab_K I ev‡R ˆeV‡Ki KvQ w`‡q তারা ঘটনাক্রমে গমনও করে,তবে গাম্ভীর্য ও ভদ্রতা mnKv‡i H ¯vb Z¨vM K‡i P‡j hvq|

**Øv`k ¸Y:** তাদেরকে যখন আল্লাহর আয়াত ও পরকালের K_v ¯§iY Kiv‡bv nq, ZLb Zviv keYkw³ I Aš `wóm¤úb gvb‡li gZ G¸‡jv m¤ú‡K wPšvfvebv K‡i Ges Z`vbhvqx Avgj K‡i|

**Î‡qv`k ¸Y:** তারা বলে, হে আল্লাহ ! তুমি আমাদের স্ত্রী ও সন্ vb‡`i‡K Avgv‡`i Rb¨ †Pv‡Li kxZjZv ¯i¦c ewb‡q `vI Ges Avgv‡`i gËwK‡`i mi`vi ewb‡q `vI|

DcwiD³ Av‡jvPbvi gva¨‡g GK_v ¯úó n‡jv ‡h, KiAv‡b nvKxg I nv`x‡mi wb‡`kbv †gvZv‡eK †Kvb ev›`vi Kv‡Q G mg¯¸Y hw` we`¨gvb _v‡K Zvn‡j cwievi, mgvR GgbwK iv‡ó †Kvb cKvi `bwZ, `v½-nv½vgv, gvivgwi, Kjn I Akwš †Kvb fv‡eB ¯vb cv‡e bv|

ZvB Avmb, Avgiv KiAvb-mbvni mwVK c_ Aej¤b K‡i dih Bev`‡Zi cvkvcwk bdj Bev`Z I জিকিরের মাধ্যমে আল্লাহ তায়ালার প্রিয় বান্দা হওয়ার †mŠfvM¨ ARb Kwi|